ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 272-273

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

गंजिफा कला और कार्ड: एक लुप्तप्राय कला का विवेचन

1. कु0 वर्षा
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-18.12.2023, Revised-24.12.2023, Accepted-28.12.2023 E-mail: varsha.93sre@gmail.com

सारांश: ***गंजिफा एक प्राचीन भारतीय कार्ड खेल को दिया गया नाम है। दुनिया के अन्य देशों की तरह भारत में भी ताश खेलना एक बहुत लोकप्रिय खेल है, इस खेल का आगमन भारत में मुगल काल के समय हुआ। भारतीय गंजिफा कार्ड अत्यधिक रंगीन और हस्त निर्मित होने के साथ ही विभिन्न रूपों में चित्रित किये जाते है। गंजिफा कार्ड में मानव या पशु आकृतियों के चित्रण का वर्णन किया गया है। गंजिफा कार्ड संग्रहकों के लिए एक कलाकृति, अद्वितीय और प्राचीन वस्तु के रूप में प्रचलित हुए। वर्तमान समय में गंजिफा को एक मरती हुई कला के रूप में जाना जाता है। जो संरक्षण और जागरूकता की कमी के कारण लुप्त हो रही है। गंजिफा नामक इस सुंदर और मूल्यवान कला रूप के बारे में बहुत कम साक्ष्य या अध्ययन उपलब्ध हैं। आज यह कला केवल टी कोस्टर या फ्रेम या ट्रे सेट पर ही देखी जा सकती है। फारस और भारत जैसे देशों में, कला के बारे में कम जानकारी के कारण हाथ से बने गंजीफा कार्ड या कला का बाजार मूल्य बहुत कम हो गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य गंजिफा कार्ड जैसे शिल्प के महत्व और संबंधित सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों पर चर्चा करना है।***

कुंजीभूत शब्द– मुगल गंजिफा, फारस, मैसूर, भारत, गंजिफा, दशावतार गंजिफा, नवग्रह गंजिफा, मामूलक, सुदर्स, मैसूर।

गंजिफा कार्ड जिनकी उत्पत्ति फारस में हुई है, गंजिफा प्राचीन भारत में एक लोकप्रिय कार्ड खेल के रूप में प्रसिद्ध रहा मुगल काल में बड़े पैमाने पर खेला जाने वाला गंजिफा अब खेल से ज्यादा ताश पर की गई कलाकृति के लिए जाना जाता है। गंजिफा शब्द फारसी शब्द 'गंजीफेह' से आया है जिसका अर्थ ताश खेलना है। देश के प्रत्येक क्षेत्र में खेल का अपना–अपना स्वरूप था, इसमें मैसूर गंजिफा, नेपाल गंजिफा, कश्मीर गंजिफा, महाराष्ट्र से सावंतवाडी गंजिफा, उड़ीसा, राजस्थान और गुजरात में नवदुर्गा गंजिफा प्रसिद्ध हैं, इसमें मैसूर गंजीफा को मैसूर शाही परिवार ने अपने शासनकाल के समय संरक्षण दिया था। गंजिफा ताश के पत्ते गोलाकार, अर्धवृताकार तथा कभी कभी आयताकार आकार के होते है, जिनकी पीठ पर उत्ष्ट चित्रकारी की जाती है। गंजिफा कला एक लुप्त होती कला है जिसे पुनर्जीवित करने का कार्य उड़ीसा के वनमाली महापात्रा, कर्नाटक के सुधा वेंकटेश और मैसूर के रघुपति भट्ट जैसे कलाकार कर रहे हैं। चित्रों की सुंदरता ने कई कला समाजो को प्रभावित किया और एक नये रूप को भी प्रेरित किया। गंजिफा कार्ड खेल आमतौर पर हाथ से चित्रित किये जाते है, जो इसे अद्वितीय बनाता है जबकि कुछ आयताकार डेक या कार्ड बनाए जाते है। आमतौर पर कलाकार गंजिफा कार्ड बनाने के लिए चंदन के टुकड़ों और हाथी दांत का उपयोग करते है। वे कार्डो पर सोने और चांदी की परत चढ़ाते है। इन्हें क्रीडा पत्र के नाम से भी जाना जाता है। गंजीफा कार्ड खेल जटिल खेल मे आता है। 17वीं और 18वीं शताब्दी में जब यह अत्यधिक लोकप्रिय था और हर तरफ फैला हुआ था, तब इसे भारतीय अदालतों में व्यापक रूप से खेला जाता था। लोकप्रियता में वृद्धि के साथ यह लेखन का एक हिस्सा बन गया और कछुओं को सम्मान देने के लिए कीमती पत्थरों से जड़े हुए बेचने के लिए जटिल डेक बनाए गए। साम्राज्यों के व्यापक प्रसार के अनुसार इस कला रूप में भी अपनी विभिन्नताएं आ गयीं, जो पौराणिक कथाओं, ज्योतिष, पुराण और अन्य की एक श्रृंखला को प्रदर्शित करता है। अलग अलग क्षेत्र और उसके समय के अनुसार गंजिफा के विभिन्न प्रकार और संस्करण विकसित हुए। जिनमे मुग़ल गंजिफा, राशी गंजिफा, अष्टदिग्पाल गंजिफा, नवग्रह गंजिफा, दशाअवतार गंजिफा, रामायण गंजिफा प्रमुख है।

मैसूर चाड गंजिफ़ा– मैसूर गंजीफा कार्ड बनाने का केंद्र था, जिसे 19वीं सदी के मध्य में शासक .ष्णराज वाडियार तृतीय ने प्रोत्साहित किया था। उन्होंने जटिल गंजिफ़ा खेलों की एक श्रृंखला तैयार की, जिनमें से कुछ के लिए 18 अलग–अलग सूट, स्थायी ट्रम्प और वाइल्ड कार्ड की आवश्यकता थी। एक विशिष्ट चाड सूट में बारह अंक और छह कोर्ट कार्ड होते थे, और पैक्स में 360 से अधिक कार्ड होते थे। उन्होंने कभी भी व्यापक आकर्षण हासिल नहीं किया और काफी अस्पष्ट हैं, संभवतः केवल उनके शाही महल के भीतर ही खेले गए हों। 45 खेलों का वर्णन श्रीतत्वनिधि नामक .ति में 'कौतुक निधि' खंड में किया गया है, और रंगीन चित्र कार्डो के लिए डिज़ाइन दिखाते हैं।

मुगल गंजिफा– यह 12 कार्डो के 8 सूटों का एक सेट था और इस प्रकार कुल 96 कार्ड बनते है। प्रत्येक सूट अलग रंग का होता है इसमें एक से 10 तक दस पीस कार्ड और दो कोर्ट कार्ड एक वजीर और एक राजा शामिल होते है। विशिष्ट क्षेत्र के आधार पर कलाकार प्रत्येक सूट पर अलग–अलग रंग से पेंट करते है। ये कार्ड मैसूर, महाराष्ट्र, राजस्थान और ओडिशा मे उपलब्ध है।

दशावतार गंजिफा– महाराष्ट्र के सावंतवाड़ी क्षेत्र में दशावतार प्रसिद्ध रूपों में से एक है। कार्डों में 120 कार्डो के सेट द्वारा विष्णु के दशावतारो को दर्शाया गया है जो स्वयं को बुराई के विरोध में प्रकट करते है। प्रत्येक 12 कार्ड के 10 सूट है सूट विष्णु के 10 अवतारों के अनुरूप है सूट का क्रम इस प्रकार है मत्स्य (मछली), कुच्छ (कछुआ), वराह (सूअर), नरसिम्हा अर्धमानव (शेर या आधा आदमी आधा शेर), वामन (बौने के रूप में विष्णु), परशुराम (कुल्हाड़ी के साथ राम), राम (धनुष और तीर), .ष्ण (गोल प्लेटे दिखाई गई है), बुद्ध (शंख), कल्कि (तलवारे) जैसे अवतार है। ये कार्ड महाराष्ट्र ओडिशा और बंगाल क्षेत्रो में लोकप्रिय रहे है।

अष्ट दिगपाल– गंजिफा उड़ीसा के मुक्तेश्वर मंदिर से प्रेरणा लेकर कलाकार प्रेरित हुए। वे हिंदू पौराणिक कथाओं में आठ पवित्र दिशाओं के संरक्षण पर आधारित है। अष्ट का अर्थ है संख्या 8, दिग का अर्थ है, दिशा व पाल का अर्थ है, अभिभावक।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

नवग्रह गंजिफा–यह सौरमंडल के नौ ग्रहों पर आधारित है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार प्रत्येक कार्ड एक भगवान का प्रतिनिधित्व करता है। इस कलेक्शन में नौ ग्रहों पर आधारित 9 सूट है। नवग्रह गंजिफा भी उड़ीसा से संबंधित है।

मैसूर गंजिफा– 19वीं सदी के मध्य मैसूर गंजिफा कार्ड बनाने का एक केंद्र था। मैसूर गंजिफा को मैसूर शाही परिवार .ष्णराज वाडीयार राजा द्वारा संरक्षण दिया गया था। उन्होंने जटिल गंजिफा खेलों की एक श्रृंखला तैयार कराई, मैसूर गंजिफा शैली के सभी 18 खेल हिंदू पुराणों की कहानी और श्लोक और रामायण की कहानियों पर आधारित थे। महाभारत आदि दशावतार गंजिफा जो कि हिंदू भगवान विष्णु के 10 अलग–अलग रूपों पर आधारित श्रृंखला है। यह 18 गंजिफा खेलों में सबसे लोकप्रिय थी। दशावतार गंजिफा में 120 अलग–अलग ताश के पत्तों का एक सेट है। वर्तमान समय में चित्रकार पौराणिक विषयों के अलावा महाराजा के चित्र जैसे विषयो का भी चित्रण करने लगे है।

रामायण गंजिफा– हिंदू महाकाव्य रामायण की कल्पना वाला एक प्रकार रामायण गंजिफा यह उड़ीसा की गंजिफा परंपरा से संबंधित है और इसमें आमतौर पर 8,10 या 12 सूट होते है। इसके आलावा अष्टमल गंजिफा जिसका अर्थ है : 'आठ पहलवान' कृष्ण को विभिन्न युद्धों का वर्णन करते हुए दर्शाया गया है।

नक्श गंजिफा– 48 कार्डों के साथ नक्श खेलने के लिए केवल एक डेक है, जिसमे 4 इकाईया या घटक होते है। ये डेक 12 कार्डों को चलाने के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रतीको को अलग कार्ड मे फ्रेम करके पैक किया गया था। यह डेक भारत में उत्सव जैसे विशेष अवसरों के समय खेले जाते थे।

अकबर का गंजिफा– 16वीं शताब्दी के मुगल साम्राज्य में सम्राट अकबर ने 12 उपयुक्त डेक का उपयोग किया जिसका वर्णन आईने अकबरी में विस्तार से किया गया है। इस डेक में घोड़ें, हाथी, पैदल सैनिक, किले और खजाने कवचधारी योद्धा, नावे, महिलाएं, देवता, जंगली जानवर और सांप थे।

राशि गंजिफा– एक 12 अनुकूल भारतीय डेक है जिसमें राशि चक्र के 12 संकेतों से प्राप्त सूट प्रतीक है। यह 18वीं और 19वीं शताब्दी तक ही सीमित प्रतीत होता है।

मामूलक गंजिफा– ऐसे बहुत कम कार्ड अस्तित्व में है। लियो आर्य मेयर द्वारा पाए गए उदाहरणों से पता चलता है कि उनमें चार सूट होंगे। कप, सिक्के, तलवार और पोलो स्टिक प्रत्येक डेक में तीन कार्ड होते थे। राजा, पहला वजीर और दूसरा वजीर कार्ड में कोई अलंकारिक चित्र नहीं है। लेकिन उनमें सुलेखित शिलालेख और बड़े पैमाने पर सजाए गए पृष्ठभूमि शामिल है।
फ्रांसीसी गंजिफा के अनुकूल थी यह सबसे मिश्रित और नष्ट हो चुके प्रकार के डेक है।

निष्कर्ष– वर्तमान में अधिक आधुनिक कलात्मकता के कारण गंजिफा नाम ने अपनी पहचान खो दी है हालांकि हाथ से पेंटिंग की पारंपरिक तकनीक के उपयोग और कार्डो को सुशोभित करने वाले समृद्ध जटिल विवरणो के कारण गंजिफा कला को चित्रित करने की पहल की गई है। कई कलाकार और संगठन समान रूप से कला को पुनर्जीवित करने के लिए कार्यरत है। बेंगलुरु का कर्नाटक चित्रकला परिषद ऐसा ही एक महत्वपूर्ण संगठन है। प्रसिद्ध कलाकार रघुपति भट्ट व सुधा वेंकटेश गंजिफा कार्ड पर चित्रण कार्य कर रहे है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ganjifa, A forgotten art https://www.inkedin.com/pulse/ganjifa-forgottenart-vibhanshu.Chaturvedi
2. Mysore Ganjifa: Reviving a forgotten Art form https://www.thebetterindia.com/4191/mysore-ganjifa/
3. www.chitrolekha.com /vi/n2/09_Dashabatar_Taas_of_ http://villainsgoleft.tumblr.com/post/31718501392 Bishnupur.Pdf
4. The Ganjifa cards :Lost Art of the mysore Royalty https://www.caleidoscope.in/art-culture/the-ganjifa-cards-mysuru
5. Prathama srsti mysuru ganjifa art https://www.prathamasrsti.com/mysuru-ganjifa-art
6. A study on Fading Art Form Ganjifa cards https://www.researchgate.net/publication/367433456_a_study_on_fading_ art_form_-ganjifa_cards
7. Ganjifa https://en.wikipedia.org/wiki/Ganjifa https://rajasthanstudio.com/ganjifa-art-and-cards-a-brief-history/
8. Ashtadikpala: A Rare and Unusual Set of Ganjifa Cards Unusual set of Ganjifa cards http://www.heritageuniversityofkerala.com/JournalPDF/Volume3/45.pdf
9. Ganjifa: Mysore Painting | PDF | Watercolor Painting |Color-Scribed https://www.scribd.com/presentation/128436345/ganjifa

*****